कमल से भरा आकाश

शान्ती कृष्णास्वामी

चित्राँकनः सुजाता सिंह

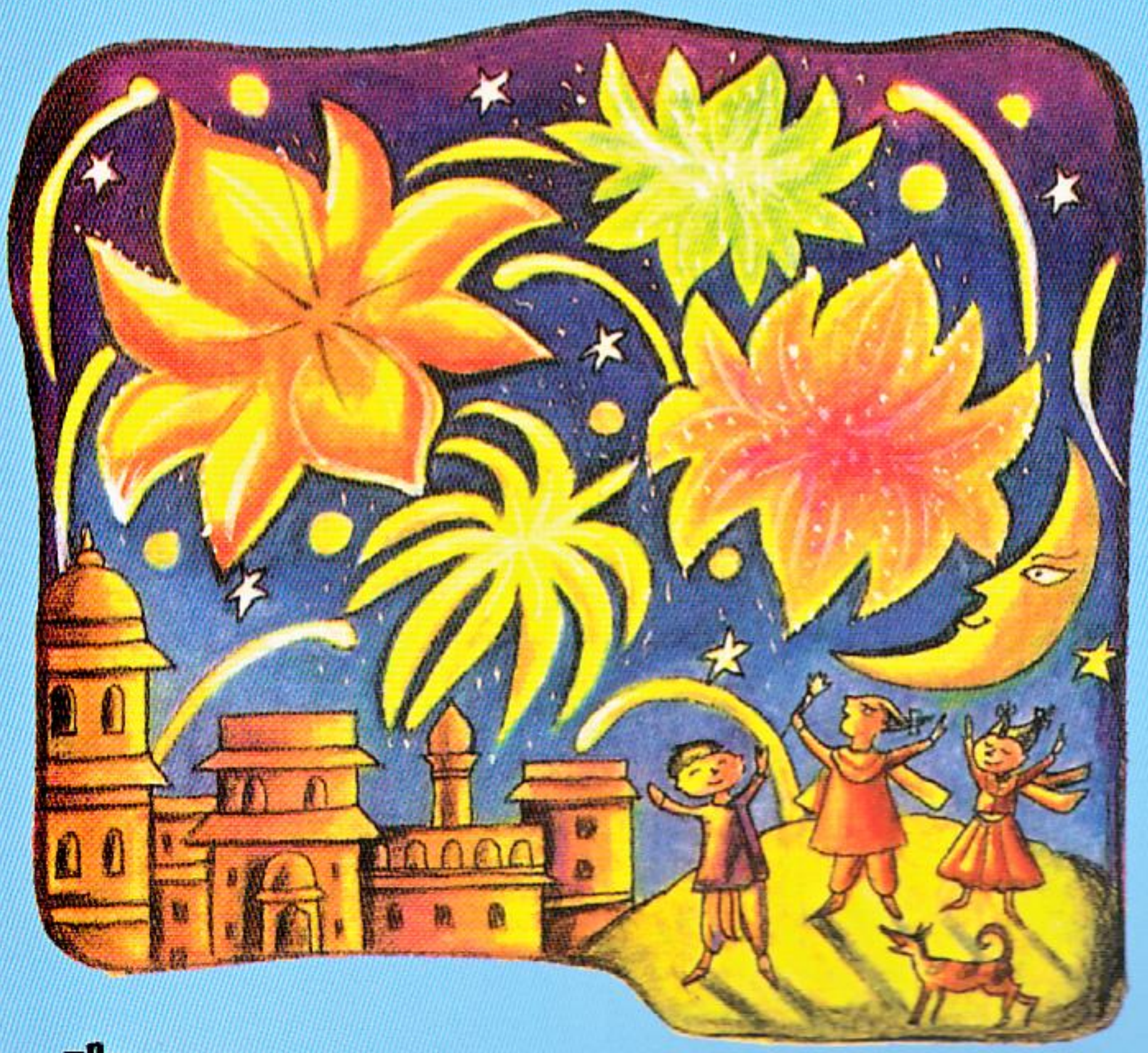

कमल से भरा आकाश

शान्ती कृष्णास्वामी
चित्राँकनः सुजाता सिंह

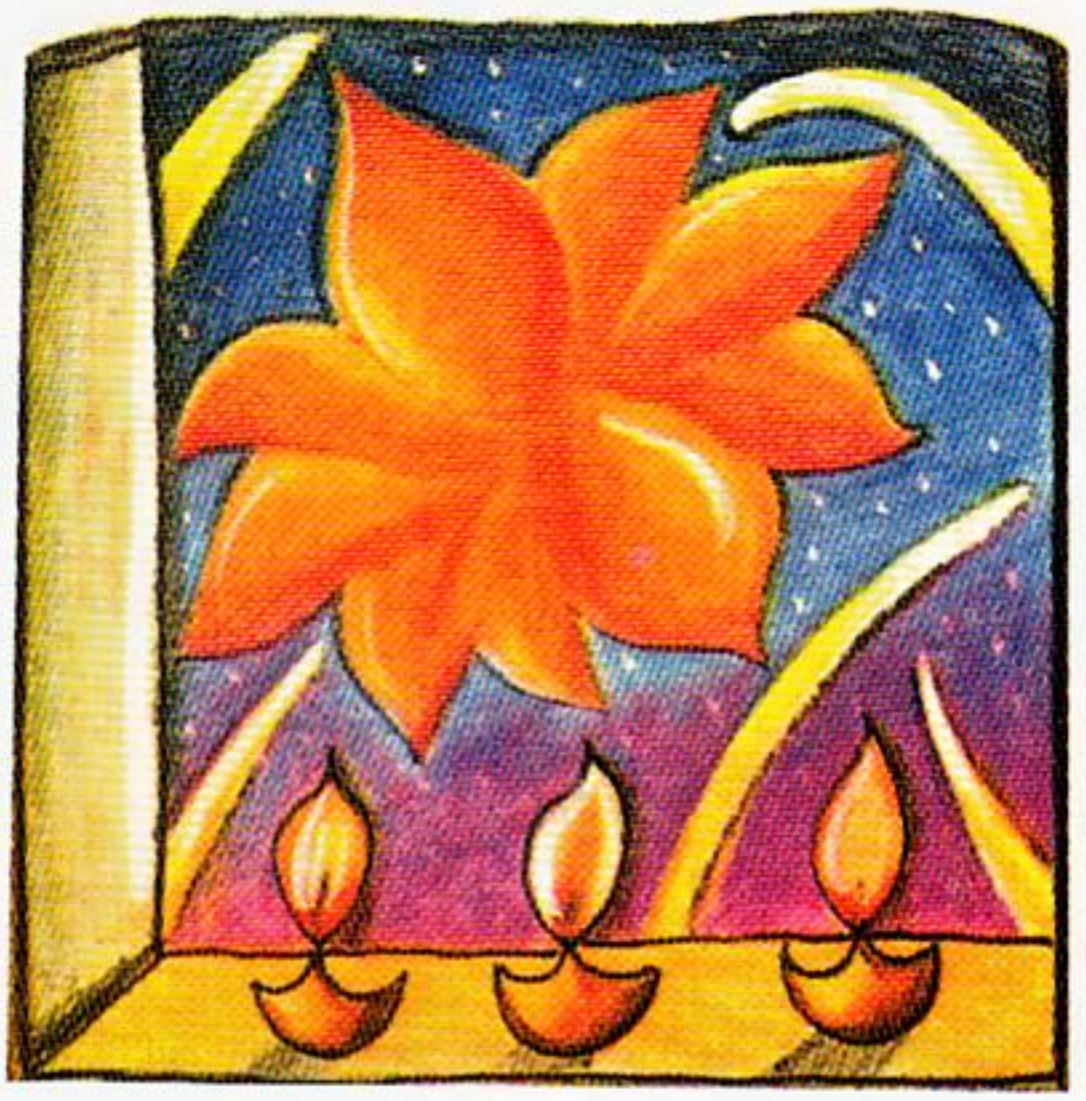

सूरज की बाईं ओर और
चन्द्रमा की दाईं ओर, एक
छोटा-सा शहर था चमकपुरी।

चमकपुरी में पटाख़ों के कई कारख़ाने थे।

उनमें से, चमक पटाख़ा कम्पनी के पटाख़े अपने इन्द्रधनुषी रंगों के लिए, दूर-दूर तक मशहूर थे।

मत्थपु कम्पनी के पटाख़े ख़ूब ज़ोर-से फटते थे, और जलाने के बाद काफ़ी देर तक उन पटाख़ों की आवाज़ कानों में गूँजती थी।

मिनमिनी पटाख़ा कम्पनी के बाहर, लोग घंटों लाईन में खड़े होकर पटाख़े ख़रीदते थे।

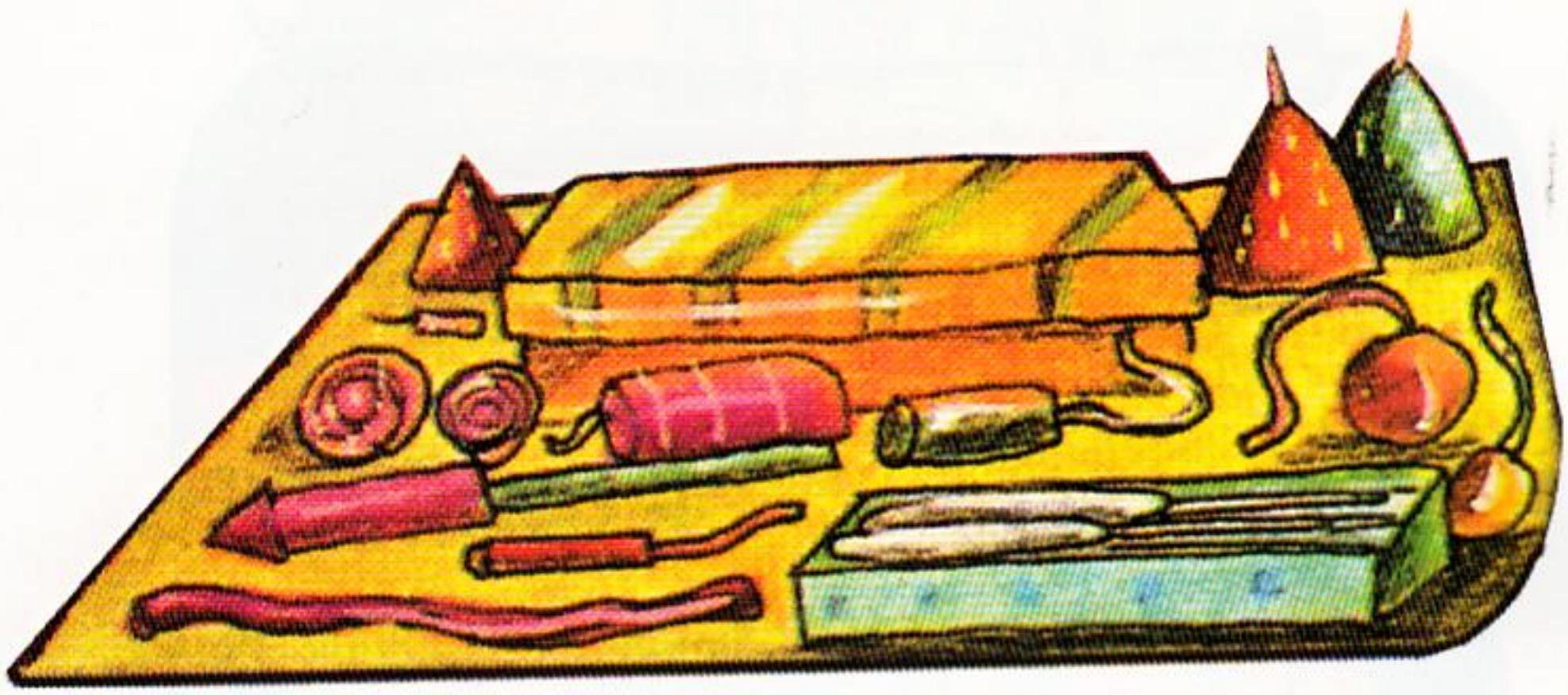

"हमारे पटाख़े हैं ही ख़ास। दूर आसमान में जाकर रंग बदलते हैं," गर्व से कम्पनी के मालिक, माथेन बाबू कहा करते थे।

पर सबसे ख़ास पटाख़े बनाता था मुत्थु, एक छोटा-सा लड़का जिसने यह कला अपने पिताजी से सीखी थी।

दूर आकाश में जाकर मुत्थु के रॉकेट कमल के फूल बनकर फटते थे।

कमल का रंग भी खूब चमकता था।

"ये पटाख़े एक बार नहीं, कई बार फटते हैं," बच्चे कहते थे।

मुत्थु के पटाख़े सभी को अच्छे लगते थे, केवल माथेन बाबू को छोड़कर।

वे दिन-रात इसी माथा-पच्ची में लगे रहते कि, किस तरह मुत्थु के पटाख़ों का राज़ जाना जाए।

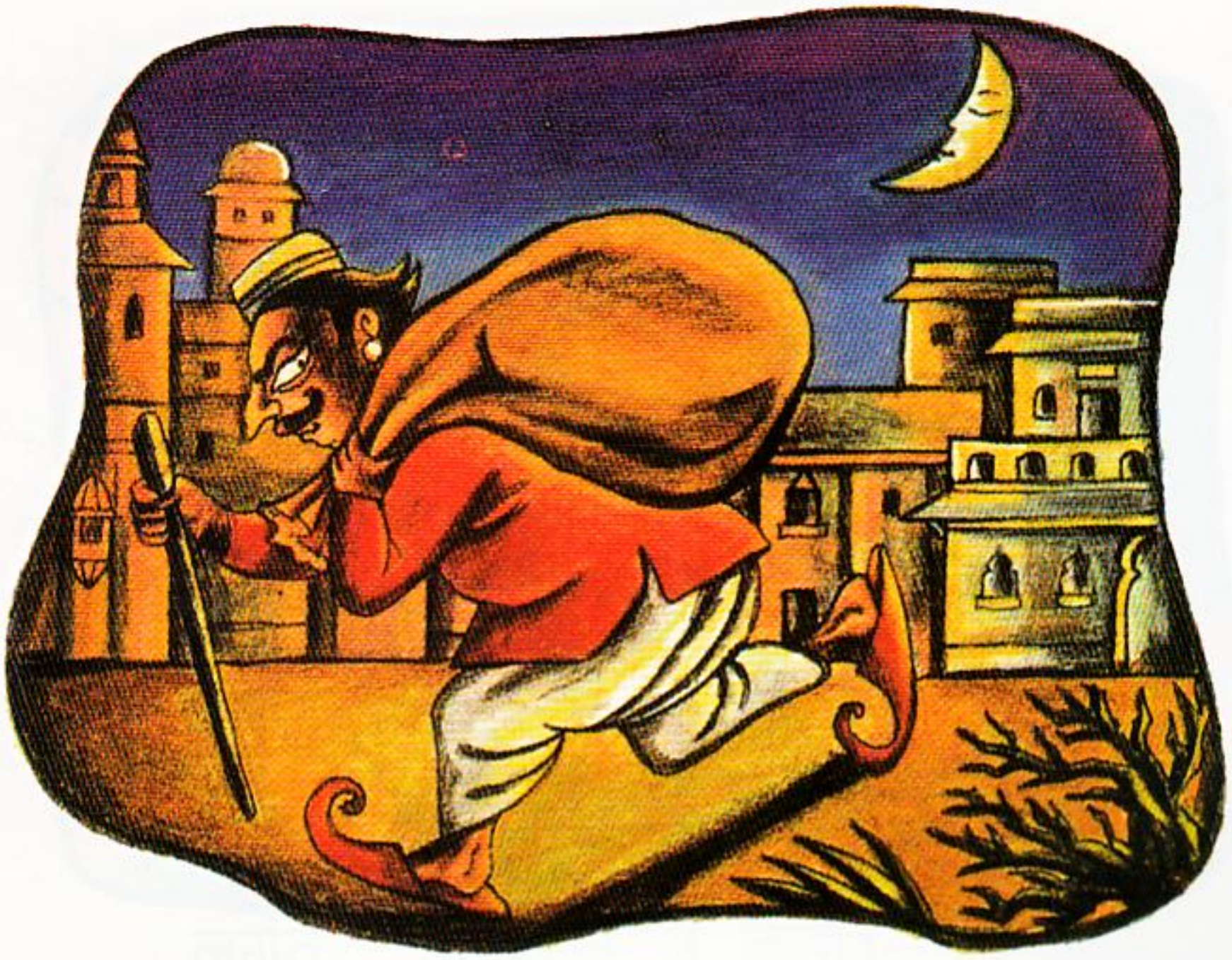

एक रात माथेन बाबू मुत्थु के घर में चुपचाप घुस गए। उन्होंने मुत्थु को एक पुरानी बोरी में डाला, उसे उठाकर ले गए और फिर उसे बाँधकर, मिनमिनी पटाख़ा कम्पनी के एक अंधेरे कमरे में बंद कर दिया।

कई महीने बीत गए। दिवाली
का दिन नज़दीक आ रहा था। तब
चमकपुरी के बच्चों को मुत्थु की याद
आई। पर यह क्या? मुत्थु तो कहीं
दिखाई ही नहीं दे रहा था!

"अगर तीन साल पहले, अपने पिता के मरने के बाद, मुत्थु ने स्कूल जाना बंद न कर दिया होता, तो हम पहले दिन से ही उसे ढूँढने लगते," अफ़ज़ल ने कहा।

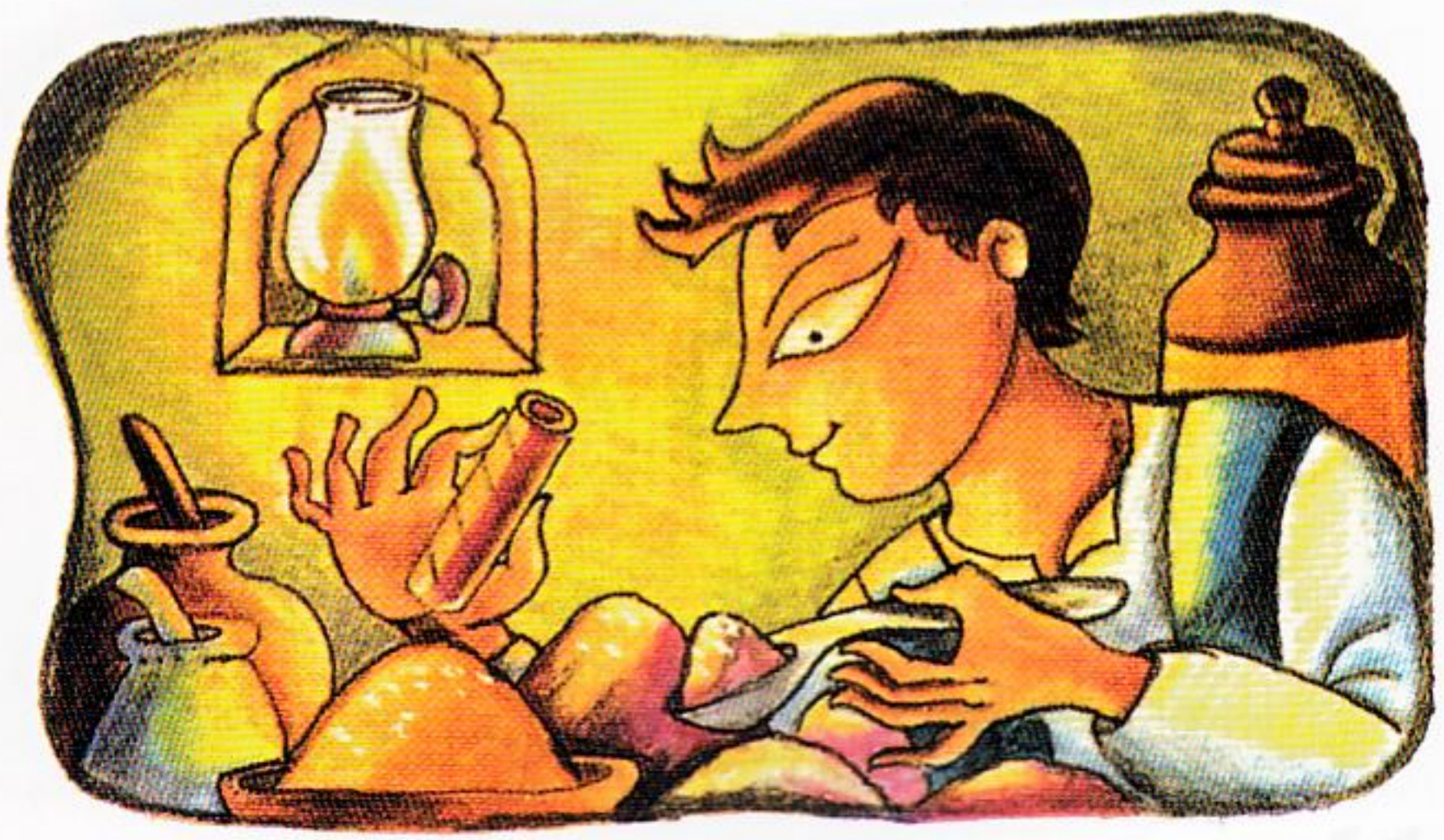

उधर माथेन बाबू की फ़ैक्टरी के अंधेरे कमरे में बंद मुत्थु, बहुत ही अकेला और डरा हुआ था।

वह मन ही मन यह प्रार्थना कर रहा था कि काश, कोई उसे ढूँढ निकाले।

वह कई हफ़्तों से माथेन बाबू के अत्याचारों को सह रहा था। माथेन बाबू के गुँडों ने उसकी पिटाई भी की थी और उसे कई दिनों से खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया गया था।

"जल्दी से हमें अपने ख़ास पटाखों का राज़ बता दो," गुँडों ने उसे धमकाया, "नहीं तो हम तुम्हें जान से मार देंगे!"

आख़िरकार मुत्थु से और नहीं सहा गया। उसने माथेन बाबू को अपने ख़ास पटाख़ों का राज़ बता ही दिया।

"अब ज़िन्दगी भर तुम मेरे गुलाम बनकर रहोगे। कोई नहीं है तुम्हें बचानेवाला!" माथेन बाबू ने मुत्थु पर दहाड़ते हुए कहा।

दिवाली से एक महीने पहले, माथेन बाबू ने मुत्थु द्वारा बताए गए तरीके से बनाए पटाख़ों को आज़माना चाहा।

फिर देखते ही देखते पूरा आसमान हज़ारों कमलों से भर गया। और ...

"मुत्थु को माथेन बाबू ने ही छुपाकर रखा है!" लछमी ने मिनमिनी की फ़ैक्टरी से निकलते कमल के फूलों को देखकर कहा, "चलो उसे छुड़ाने चलें!"

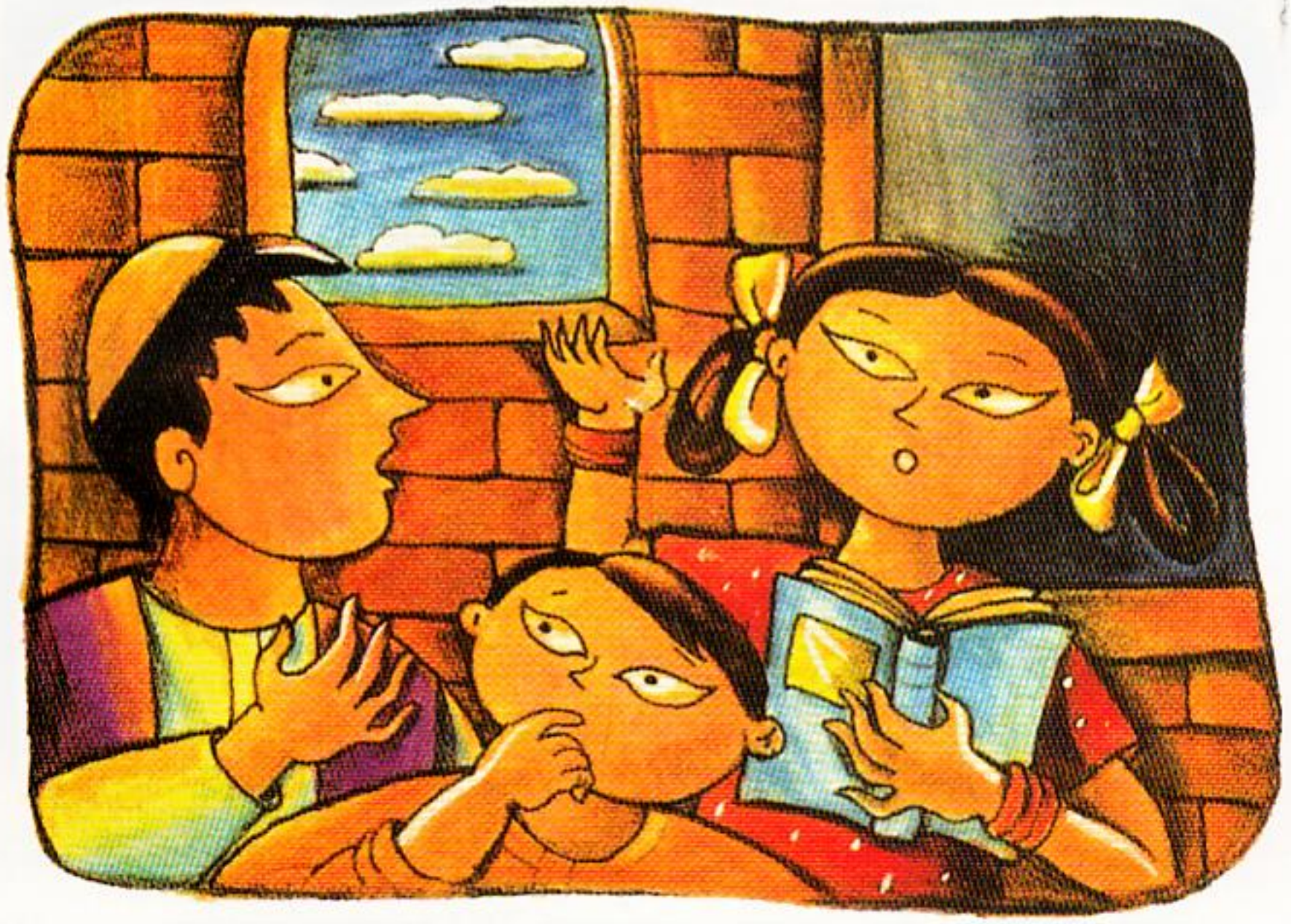

"जब तक दिवाली नहीं आई थी और हमें पटाख़ों की ज़रूरत नहीं पड़ी थी, तब तक तो हमने तुम्हें अपना दोस्त ही न माना था," मुत्थु को छुड़ाने के बाद, चमकपुरी के बच्चों ने मुत्थु से कहा। उन्हें खुद पर शर्म आ रही थी।

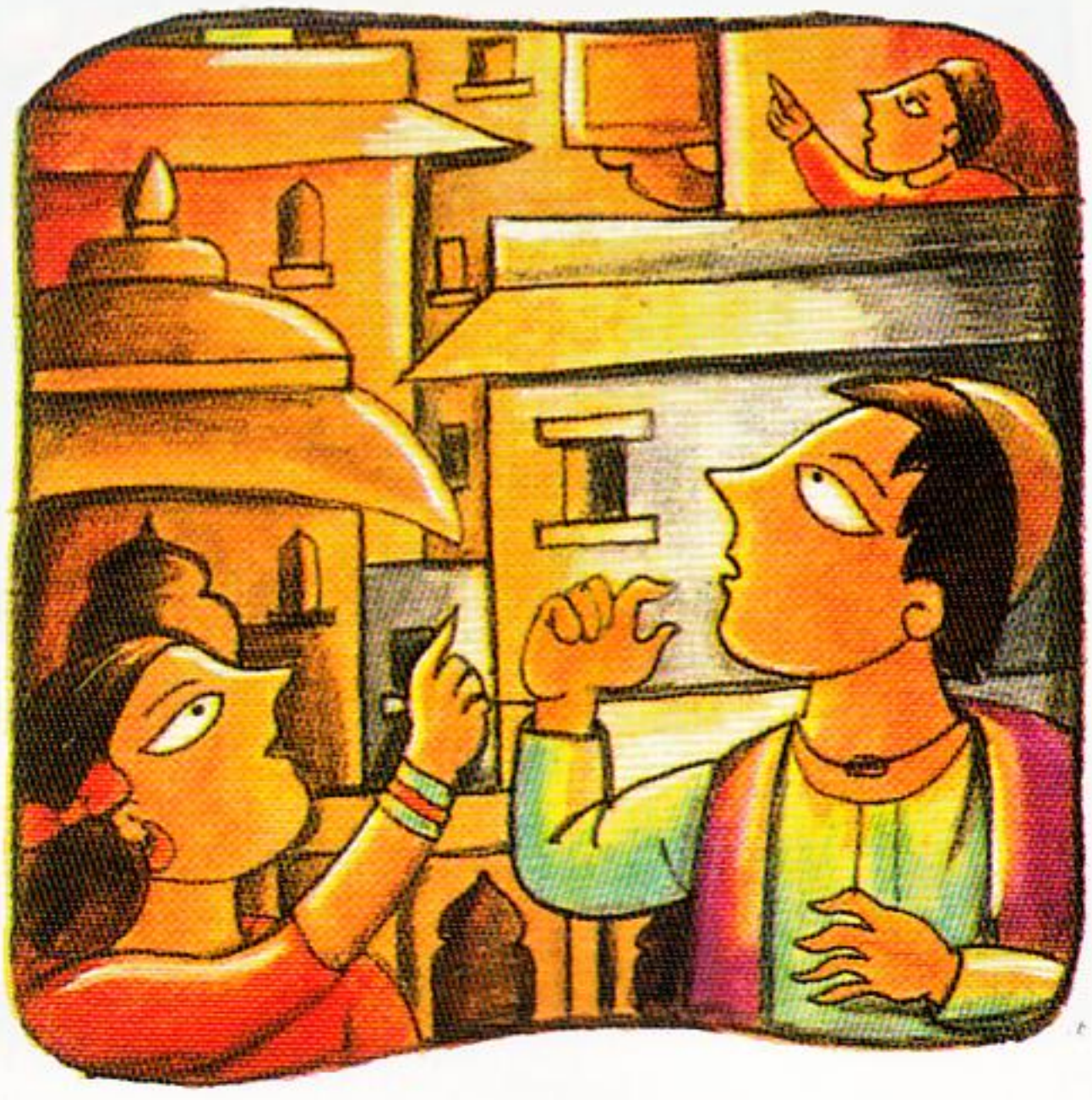

"और मुझे लगता था कि मुझ ग़रीब का भला तुम लोगों से क्या मुकाबला," मुत्थु ने धीरे-से कहा, "अब तो मैं वे विशेष पटाखे भी नहीं बना सकता। न जाने मेरा गुज़ारा कैसे चलेगा?"

सब बच्चे मुस्काने लगे, "जब हम तुम्हें ढूँढ रहे थे, तब हम सब ने मिलकर यह सोचा था कि तुम्हें स्कूल ज़रूर आना चाहिए।

स्कूल हम सब बच्चों के लिए सबसे अच्छी जगह है। क्या हुआ अगर तुम्हारे पिताजी का राज़ अब राज़ नहीं रहा?"

और बहुत-से ऐसे काम हैं जिन्हें करके तुम अच्छा पैसा कमा सकते हो।"

"स्कूल चलो न, मुत्थु," लछमी ने कहा।

"पर काम नहीं करूँगा तो मैं खाऊँगा क्या?" मुत्थु ने पूछा।

"यह तुम अपने दोस्तों पर छोड़ दो," बच्चों ने कहा।

मुत्थु ने अपने नए दोस्तों की ओर देखा। उसे लगा कि उसका सपना सच हो जाएगा। बड़ा होकर वह टीचर बन सकेगा।

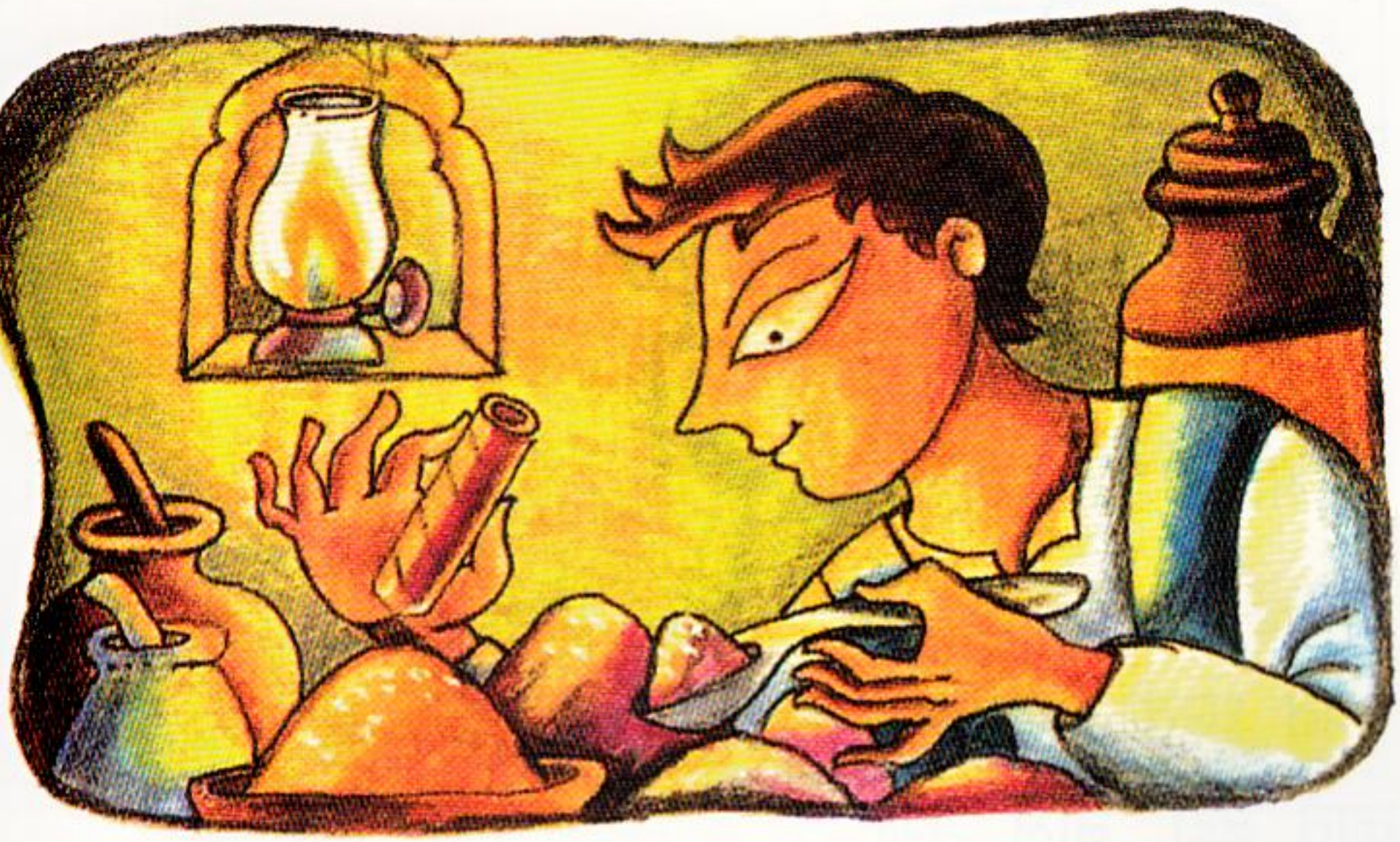

"ठीक है," उसने मुस्काते
हुए कहा, "पर एक बार,
मुझे अपने कुछ ख़ास दोस्तों
के लिए कुछ ख़ास पटाख़े
बनाने दो!"

बदलते मौसम

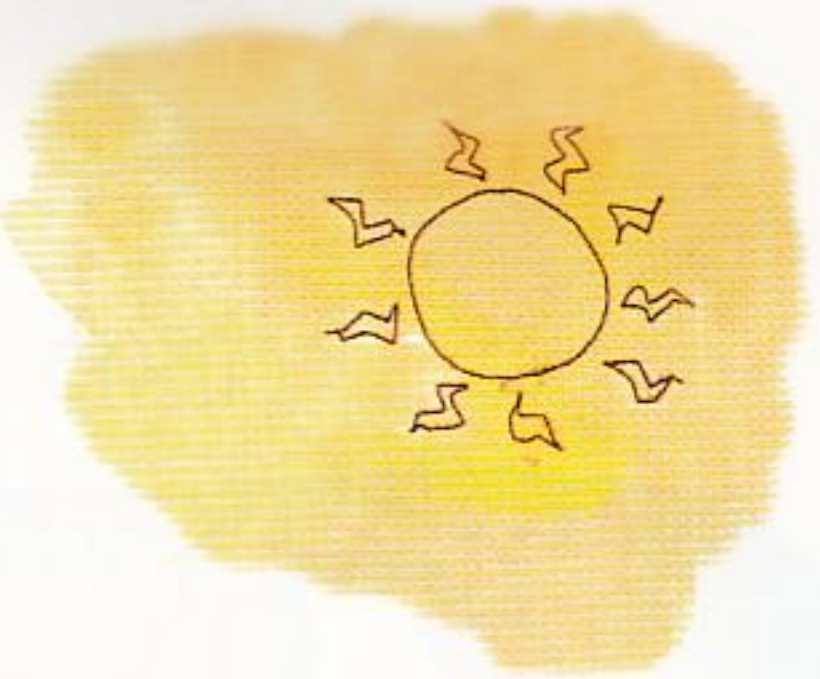

मौसम के संग
हैं बदलते पृथ्वी के रंग
पहचानो कौन से हैं
ये मौसम!

तपते धरती, आकाश,
जाते नदी, नाले सूख
होते बेहाल पंछी, जानवर, इंसान
जल्दी बताओ क्या है मेरा नाम

लगती अब धूप भली,
भाती गरम-गरम चाय
मानूँ मैं उसको
जो मेरा नाम बताए

कभी रिमझिम फुहार,
कभी बाढ़ के आसार
पर लगती सबको भली मैं,
अब बताओ कौन हूँ मैं ?

खिलते फूल, गाते पंछी
जब आऊँ मैं इठलाती,
हवा में सुगंध, मन में
उमंग सबका मन हर्षाती

चित्रांँकनः जय,
वंदना बिष्ट एवं अतनु रॉय

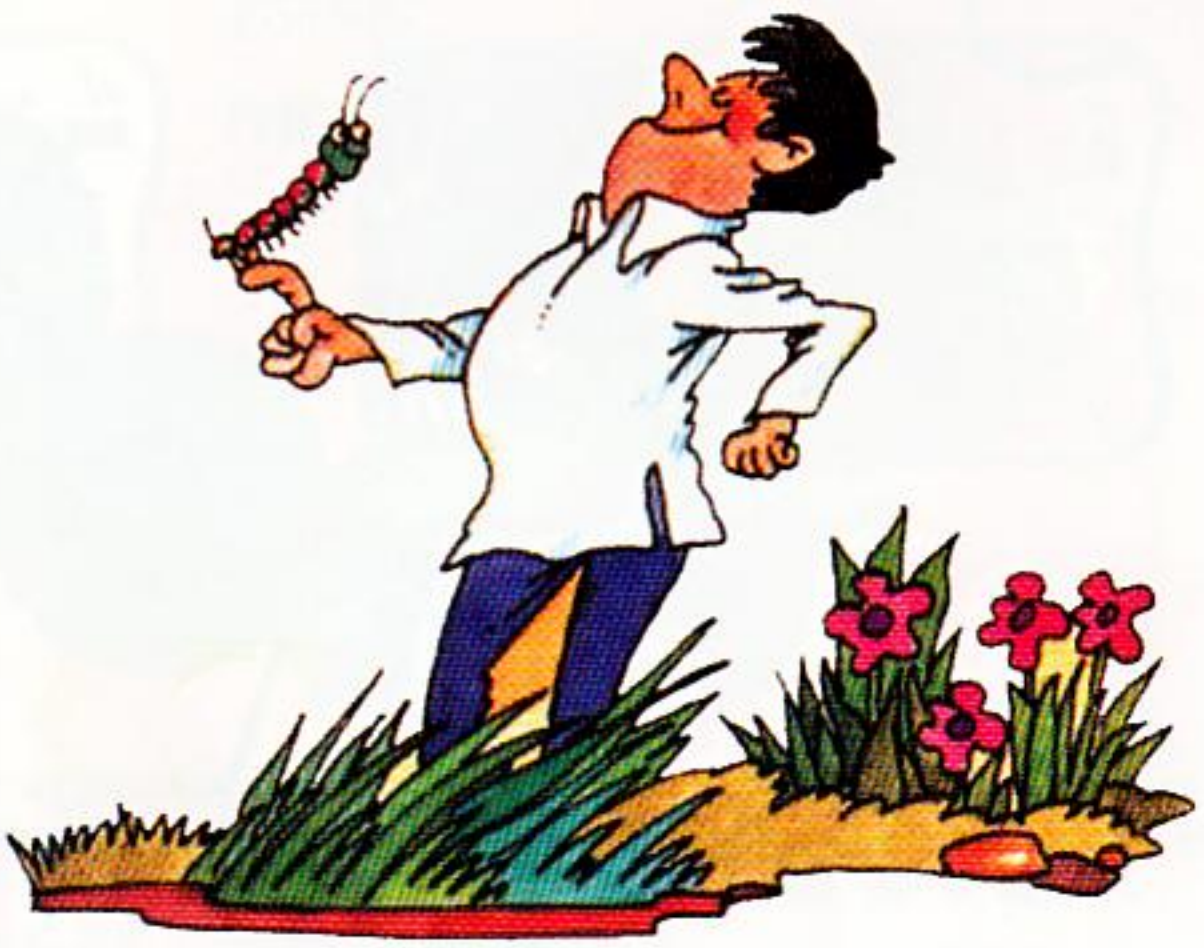

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

कथा की किताब बच्चों के लिए
ISBN 978-81-89020-64-9
www.katha.org
रु. 75/-